धर्म

१. स्वरूप. धर्म क्या है ?

२. कारण. धर्मकी उत्पत्ति कैसे ?

३. धर्म किसका साधन है ?

४. प्रयोजन. धमाचरण क्यों ?

५. धर्माचरणका फल.

६. धर्मके प्रकार

धर्मस्वरूप

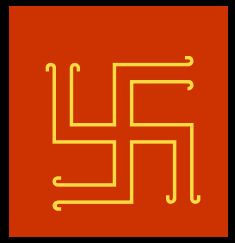

शास्त्र आज्ञा

जीवन नियम – जीवन सिद्धान्त

विधि

निषेध

शास्त्र ?

शासन करनेवाला (मित्रवत् – राजवत्)

वेद–स्मृति–इतिहास–पुराण–आगम–तन्त्र

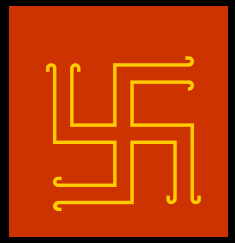

धर्मकी उत्पत्ति/कारण

भगवान् :

धर्मन्तु साक्षाद् भगवत्प्रणीतम्

धर्मसाधन

इष्टसाधक / अभ्युदय–नि :श्रेयस का साधन

प्रयोजन

दु :ख / बन्धन की निवृत्ति और सुखकी प्राप्ति

फल–सिद्धि

- स्वर्ग
- मोक्ष
- भगवत्प्राप्ति / भक्ति

धर्मके प्रकार

देहधर्म :

१. सामान्य धर्म

२. वर्ण धर्म

३. आश्रम धर्म

आत्मधर्म :

भगवद्भक्ति

धर्मस्वरूप

देहधर्म :

१. सामान्य धर्म
२. वर्ण धर्म
३. आश्रम धर्म

सामान्यधर्म

- १. धृति
- २. क्षमा
- ३. दम
- ४. अस्तेय
- ५. शौच
- ६. इन्द्रियनिग्रह
- ७. धी
- ८. विद्या
- ९. सत्य
- १०. अक्रोध

धृति–शम–सन्तोष

धृति = धैर्य, सहनशीलता, सन्तोष

महर्षि दधीचि – पद्मनाभदास–नन्ददास

मर्षि लोमशका सन्तोष:

इन्द्रकी श्रेष्ठतम भवन निर्माणकी इच्छा–विश्वकर्माद्वारा निर्माण आरम्भ–विश्वकर्माका खेद और नारदजीसे प्रार्थना–नारदका इन्द्रके पास जाना–भवन दिखानेकी इन्द्रकी लालसा–ऐसा कहीं देखा है?–दीर्घजीवी लोमशका माथेपर चटाई रखकर आगमन–एक ब्रह्माके जाने पर एक रोमका खिरना–ब्रह्माके एक दिनमें १४ इन्द्र बदलते हैं–इन्द्रका माथेपर हाथ रखकर बैठना–भवननिर्माण स्थगित

क्षमा–अहिंसा

क्षमा = माफी. सत्यपि सामर्थ्ये अपकारसहनम्.

महर्षि वशिष्ठ–विश्वामित्र

राजा विश्वामित्र–वशिष्ठकी गाय नन्दिनीकेलिये युद्ध–वशिष्ठके ब्रह्मदण्डसे परास्त–ब्रह्मर्षि बननेकेलिये तप–राजर्षि ही बन पाये–ईर्ष्या क्रोध वश वशिष्ठपुत्रोंकी हत्या करवाई–वशिष्ठकी हत्याका संकल्प–वशिष्ठद्वारा पत्नी अरुन्धतिके सामने विश्वामित्रके तपकी प्रशंसा–विश्वामित्रकी शरणागति–वशिष्ठका क्षमादान

क्षमा–अहिंसा

अम्बरीष–दुर्वासा

अम्बरीषका एकादशी व्रत–द्वादशीको पारणाके समय दुर्वासाजीका आना–भोजनका निमन्त्रण–दुर्वासा ध्यानस्थ–पुरोहितकी सलाहसे गंगाजलसे पारणा–दुर्वासाका क्रोध–जटासे कृत्या पैदा करना–अम्बरीषकी शरणागति–सुदर्शनद्वारा कृत्या भस्म–सुदर्शन दुर्वासाके पीछे–ब्रह्मलोक कैलाश वैकुण्ठ ... सभी जगहसे निराशा–एक वर्ष पर्यन्त दुर्वासा दौडनेके बाद अम्बरीषकी शरणमें –अम्बरीषसे अभयप्राप्ति–दुर्वासाको भोजन कराकर अम्बरीषका भोजन करना

प्रह्लाद–वरदान–माफी

शण्ड–अमर्क गुरुपुत्रोद्वारा प्रह्लाद पर कृत्याका अभिचारप्रयोग–कृत्या विफल–गुरुपुत्रपर आ पडी–गुरुपुत्रोंकी मृत्यु–प्रह्लादद्वारा पुनर्जीवित करनेकी प्रार्थना

द्रौपदी–अश्वत्थामा

मा रोदीद् अस्य जननी गौतमी पतिदेवता, यथाहं मृतवत्सार्ता रोदिम्यश्रुमुखी मुहुः

क्षमा–अहिंसा

दम–तप

दम = इन्द्रिय विजय/मनोनिग्रह

असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः।

वश्यात्मना तु यतता शक्योऽवाप्तुम् उपायतः।।६–३६।।

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ।।३५।।

विश्वामित्र

श्रीकृष्ण–विदुर

सीताजी

पाण्डव–द्रौपदीजी

अस्तेय

चोरी न करना

लिखित ऋषि

शंख और लिखित भाई – अध्ययनके बाद गृहस्थ बने–भिन्न आश्रममें निवास–ऋषि लिखितका भाईके आश्रममें आना–शंखकी अनुपस्थिति–भूख लगनी–फल तोडकर खाया–शंखका आगमन–अस्तेय धर्मका स्मरण करवाना–राजासे दण्ड लेकर दोषमुक्त होनेकी सलाह– राजासे हाथ कटवाये–प्रसन्न होकर भाईके पास आना–मध्याह्न सन्ध्याकरने जानेपर हाथ पूर्ववत् हो गये.

गरीब ब्राह्मण–राखकी चोरी

शौच

शौच = पवित्रता/शुद्धि

दानवमाता दिति(पुंसवनव्रत)

हिरण्याक्ष हिरण्यकशिपु का वध–दितिका खेद–पति कश्यपकी सेवा–इन्द्रको मारनेवाले पुत्रकी कामना–पुंसवन व्रत–हिंसा क्रोध दुष्टसंग अपशब्द अपवित्रता उच्छिष्टान्न संध्याशयन का त्याग – बाल नाखून न काटने – गो ब्राह्मण नारायण की पूजा–इन्द्रका भेष बदलकर आश्रममें रहना–बिना आचमन पांव धोये सन्ध्या समय थककर शयन–व्रतभंग–इन्द्रका गर्भप्रवेश–४९ मरुद्गण

१. शारीरिक शुद्धिः १. बाह्य(स्नानादि) २.आन्तरिक(वृत्ति, आहार–उपवास)
२. मानसिक शुद्धि :
३. कर्मकी शुद्धिः
४. वाणीकी शुद्धिः

इन्द्रियनिग्रह

इन्द्रियाणां प्रसंगेन दोषम् ऋच्छत्यसंशयम्।
संनियम्य तु तान्येव ततः सिद्धिं नियच्छति (मनुस्मृ.२।९३)
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता (भग.गीता)

इन्द्रियां	विषय
चक्षु	रूप
कर्ण	शब्द
त्वचा	स्पर्श
रसना	रस
नासिका	गन्ध

महर्षि दधीचि

अजुर्नका वनवास

पद्मनाभदास

धी

धी = सद्बुद्धि

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च।।
इन्द्रियाणि हयानाहुः विषयान् तेषु गोचरान्।
आत्मेन्द्रिय–मनोयुक्तं भोक्तेत्याहुः मनीषिणः।।

सामान्यधर्म
धृति
क्षमा
दम
अस्तेय
शौच
इन्द्रिय
निग्रह
धी
विद्या
सत्य
अक्रोध

विद्या

अध्यात्मविद्या विद्यानाम्

विद्या = सा विद्या या विमुक्तये

शुकदेव

प्रह्लाद

सत्य

हरिश्चन्द्र

अमरावतीमें हरिश्चन्द्रकी प्रशंसा–इन्द्र असन्तुष्ट–विश्वामित्रद्वारा परीक्षा–स्वप्नमें विश्वामित्रको राज्यदान–एक माससमें दानकी दक्षिणा स्वरूप १००० मुद्रा देना–अयोध्यासे काशी प्रस्थान–रानी शैब्याको ५०० मुद्रामें ब्राह्मणको बेचा–५०० मुद्रामें खुदको बेचा–स्मशानमें कर लेनेका कार्य–पुत्र रोहितकी सर्पदंशसे मृत्यु–शैब्याद्वारा पुत्रदेहको गंगामें प्रवाहित करने जानेपर हरिश्चन्द्रद्वारा कर मांगना–आधा वस्त्र करमें देने जाने पर इन्द्र विश्वामित्र धर्मराज का प्रकय होना

विश्वामित्र=ब्राह्मण; धर्मराज=चंडाल

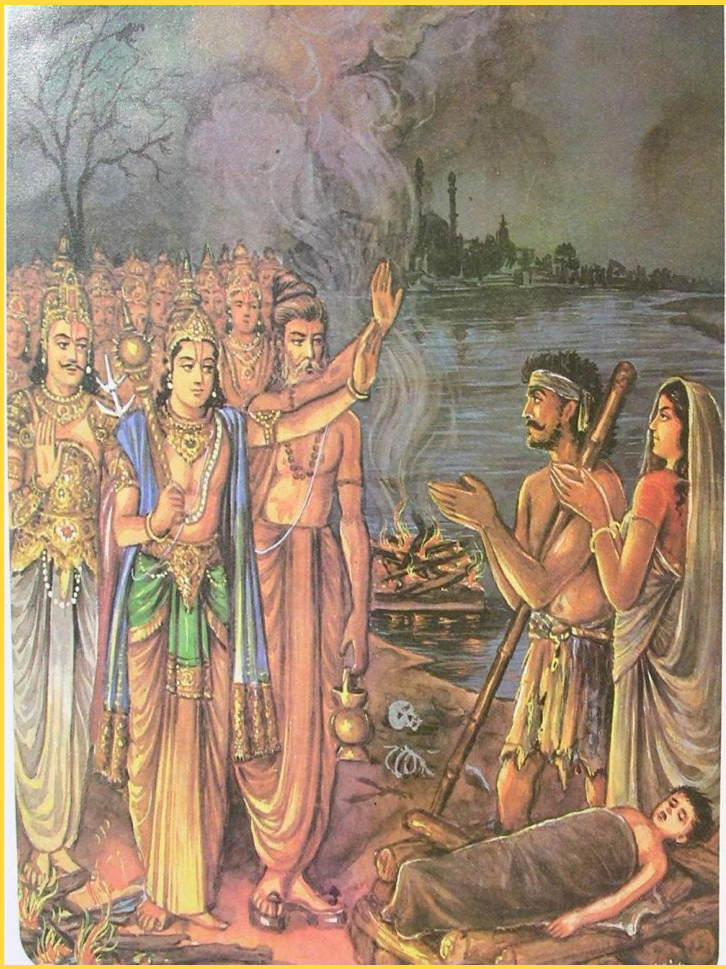

दशरथ

सामान्यधर्म
धृति
क्षमा
दम
अस्तेय
शौच
इन्द्रिय निग्रह
धी
विद्या
सत्य
अक्रोध

अक्रोध

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनम् आत्मनः।
कामः क्रोधः तथा लोभः तस्माद् एतत् त्रयं त्यजेत्।।

एकनाथका गंगास्नान

विष्णु–भृगु

विशेषधर्म

वर्णधर्म:

१. ब्राह्मणधर्म
२. क्षत्रियधर्म
३. वैश्यधर्म
४. शूद्रधर्म
५. वर्णसंकर
६. वर्णबाह्य

आश्रमधर्म

१. ब्रह्मचर्य
२. गृहस्थ
३. वानप्रस्थ
४. संन्यास
५. अनाश्रमी

वर्णाश्रमधर्म

१. नित्यकर्म

२. नैमित्तिककर्म

३. काम्यकर्म

४. निषिद्ध-पापकर्म

विशेषधर्म
वर्णाश्रमधर्म

नित्यकर्म

१. स्नान

२. संध्या

३. जप

४. होम

५. वैश्वदेव

६. स्वाध्याय

७. तर्पण

८. गोग्रास

९. अतिथिसत्कार

१०. देवपूजन

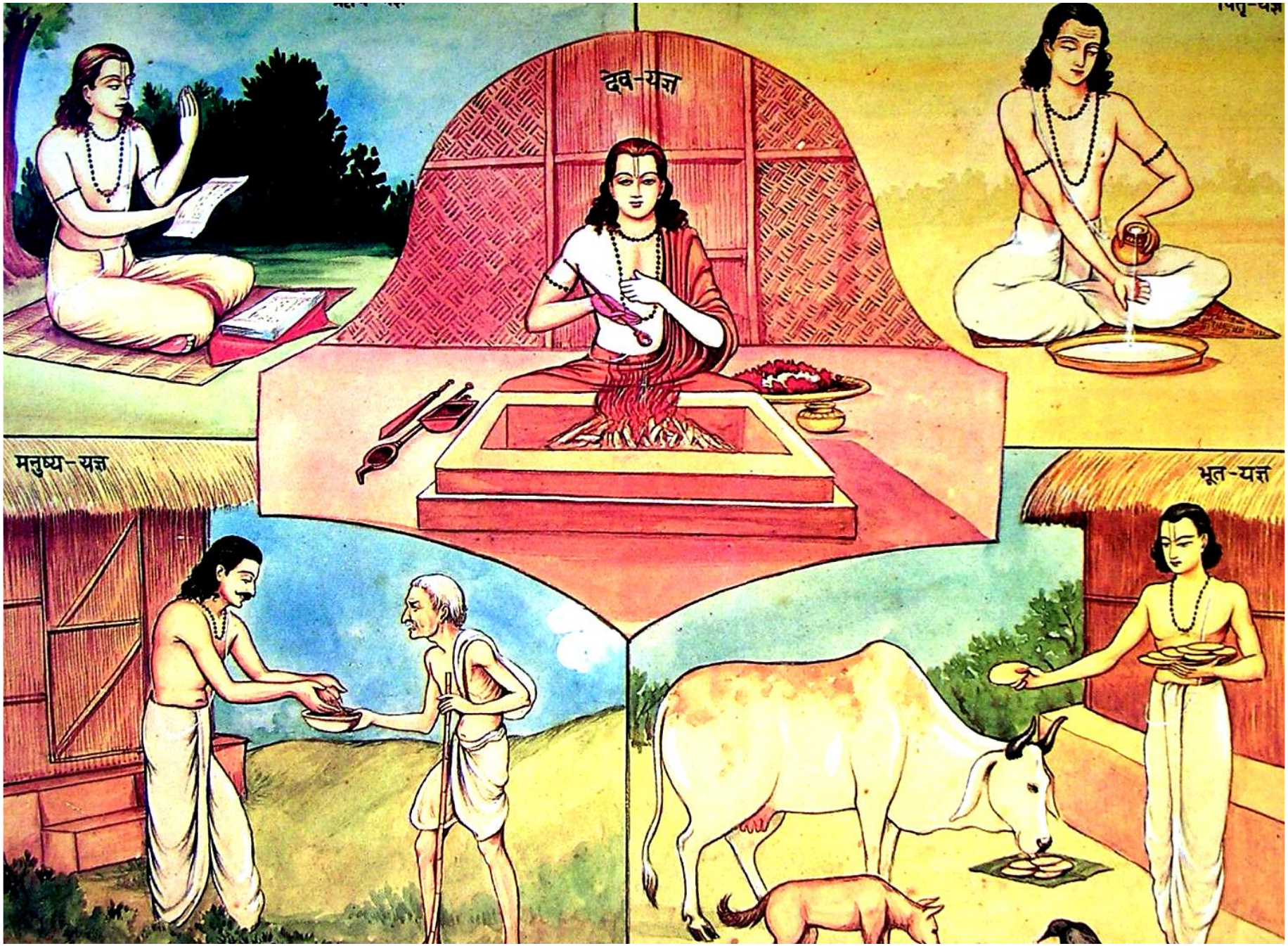
देव-यज्ञ
मनुष्य-यज्ञ
भूत-यज्ञ

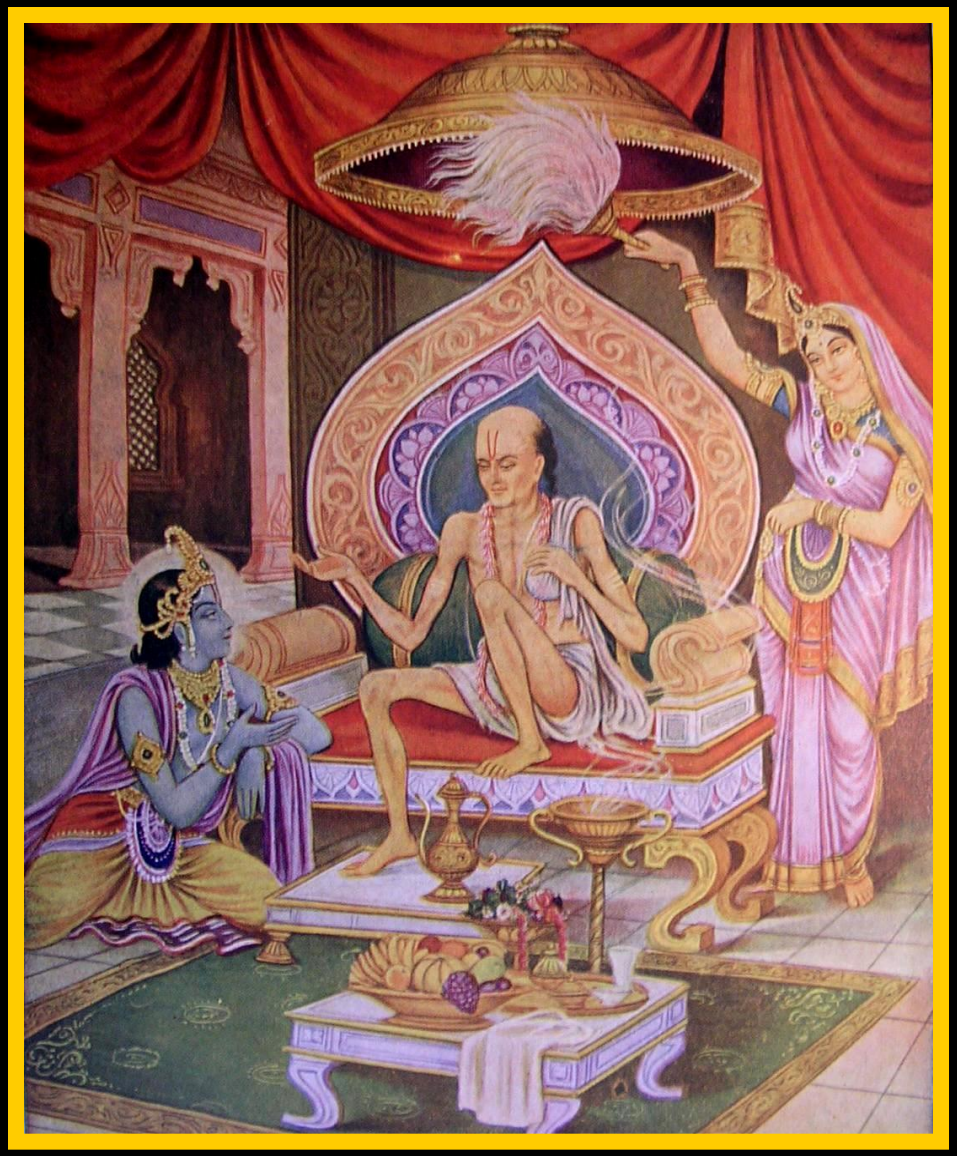

विशेषधर्म
वर्णाश्रमधर्म

नैमित्तिककर्म

- **संस्कार:** पवित्र करनेवाली शास्त्रीय विधि.

  गर्भाधान–सीमन्तोन्नयन–नामकरण–निष्क्रमण–अन्नप्राशन–चूडाकरण

  कर्णवेध–उपनयन–वेदारम्भ–समावर्तन–विवाह–अन्त्येष्टि

- **श्राद्ध :** पितरोंके प्रति किया जाने वाला कर्म.
- **प्रायश्चित्त:** पापमुक्त होनेकी शास्त्रीय विधि.
- **दान :** अपने स्वामित्वकी वस्तु किसीको नियम/इच्छासे देना.
- **व्रत–उपवास:** नियमपालन–प्रभुसे निकटता
- **अन्य श्रौत–स्मार्त कर्म:**

काम्य–निषिद्ध कर्म

काम्यः

सन्तान–पुत्रकामेष्टि

स्वर्गादि लोक–ज्योतिष्टोम

शत्रुनाश–श्येनयाग

धन

सुख

निषिद्धः

असत्य

हिंसा

दुराचार

चोरी

आत्मधर्म

१. श्रवण

२. कीर्तन

३. स्मरण

४. पादसेवन

५. अर्चन

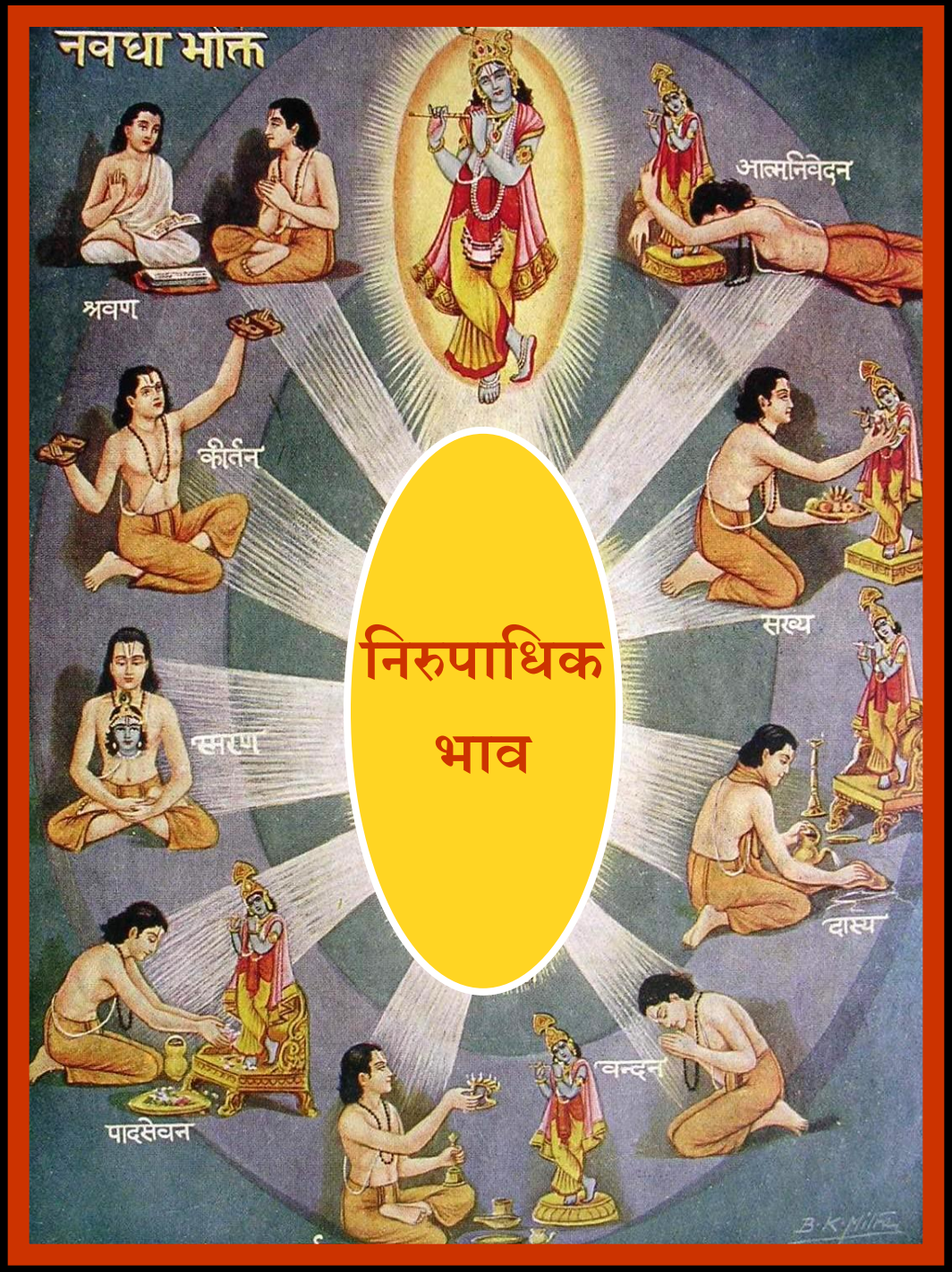

९. आात्मनिवेदन

८. सख्य

७. दास्य

६. वन्दन